सम्पूर्णता वर्ष

मग्न हो जाएँ प्रभु प्यार में – 3

18.05.2014

1. **नशा** – खुदा मेरा दोस्त है।

- (अपने खुदा दोस्त से इस तरह बातें करें) दोस्त मुझे तुम्हारी दोस्ती पर नाज है....मैं संसार की सबसे सौभाग्यशाली आत्मा हूँ जिसे उसका इतना पुराना बिछुड़ा हुआ दोस्त दुबारा मिल गया....दोस्त मैंने तो अपनी सारी अच्छी क्वालिटीज, सारी दिव्यता व पवित्रता गंवा दी थी लेकिन ऐसे वक्त पर भी तुमने मुझे अपनाकर अपनी दोस्ती निभाई....दोस्त तुमने फिर मुझे अपने समान पावन श्रेष्ठ बना दिया....दोस्त मैं भी वायदा करता हूँ, मैं तुमसे किया हुआ पवित्रता का वायदा अंतिम श्वांस तक निभाऊंगा....क्योंकि मुझे पता है तुम्हें पवित्रता अत्यधिक प्रिय है....तुम्हारे प्यार व तुमसे मिले सुख के आगे मैं सारे संसार को त्याग दूँगा....।

2. **योगाभ्यास** –

अ. दिन भर अपने खुदा दोस्त के साथ रहें....उसी के साथ खाएँ, खेलें,घूमें, फिरें,नाचें,गाएँ....और अपने पुरुषार्थ को श्रेष्ठ बनाने व ईश्वरीय सेवाओं में सफलता पाने के लिए उसकी मदद लें....।

ब. अपने दिल की हर बात अपने खुदा दोस्त के साथ शेयर करें....उसी से कहें, उसी से सुनें....।

3. **धारणा** – मुझे मेरे दोस्त से एक ही डोर बांधे रख सकती है और वह है मेरी **सच्ची पवित्रता**। वह बहुत भोला है, बहुत मीठा है, सम्पूर्ण पवित्र है, उसे चतुराई या देह अभिमान बिल्कुल पसंद नहीं।

4. **चिंतन** –

- सच्ची दोस्ती किसे कहेंगे ?
- आत्माओं की दोस्ती और भगवान की दोस्ती में क्या अंतर है ?
- मेरा खुदा दोस्त मुझे कैसा देखना चाहता है ?

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों ! हमारे जीवन के इस सफर में अचानक एक अद्भुत घटना घटी। हमें एक ऐसा दोस्त मिल गया जिसने हमारी सारी जिम्मेवारी स्वयं उठा ली, हमें 21 जन्मों के लिये सब कुछ दे दिया, हमारी ऐसी तकदीर बना दी जो भविष्य के राजा-महाराजाओं या आज के अरबपतियों की भी नहीं है और उसने स्वयं हमसे कुछ भी नहीं चाहा, उसने सिर्फ और सिर्फ हमें दिया ही।

हम आत्माएं सुदामा की तरह अपने मूल गुणों, अपनी मूल शक्तियों को खोकर दुःखी और गरीब बन गई थीं। कुछ भी हमारे पास नहीं रह गया था केवल कुछ मुट्ठी चावल के। हम सुदामाओं को खुदा ने अपना दोस्त बनाकर कौड़ी से हीरे जैसा बना दिया। उसके इन उपकारों को याद करके मग्न हो जाएँ उसके प्यार में।